नाश्ते में ड्रैगन

लेखन व चित्रः युनस व नाइजेल मैकम्युलैन
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा




नाश्ते में ड्रैगन



नाश्ते में ड्रैगन

लेखन व चित्रः युनस व नाइजेल मैकम्युलैन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



लिंडसी को



बहुत समय पहले पहाड़ों और झीलों
के देश में एक शानदार महल था . .



. . . जिसमें उल्फ नाम का एक राजा रहता था।

उल्फ राजा तो था, पर वह काफ़ी चिड़चिड़ा भी हो सकता था, ख़ासकर तब, जब उसके सुबह के नाश्ते में देर हो जाए। और इस सुबह तो उसके नाश्ते में बहुत ही देर हो चुकी थी।

और फिर हाल को और बदतर बनाने के लिए उसके नरम उबले अंडे का ऊपरी हिस्सा तोड़ कर हटाया भी नहीं गया था।

राजा उल्फ ने अपना चम्मच अंडे के ऊपरी हिस्से पर ज़ोर से मारा। एक अजीब चिंचिंयाती-सी आवाज़ आई - तब एक छोटा सर अंडे के बाहर निकला।





राजा उल्फ को अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं हुआ। अंडे के अन्दर से एक नन्हा-सा ड्रैगन निकला, जिसकी नाक से धुँआ उठ रहा था। उसने अपने डैन फड़फड़ाए और खुद को चाट कर साफ़ करने लगा।

राजा उल्फ ने उसे घूरा, और घूरता ही गया।

वह यह भूल गया कि वह भूखा है।

वह यह तक भूल गया कि उसका मिजाज़ चिड़चिड़ा रहा है

"रानी को बुला लाओ," राजा ने चिल्ला कर खानसामे से कहा।

ड्रैगन उछला और राजा के हाथ पर जा बैठा। उस छोटे-से जीव ने पहले राजा की मूंछों को देखा, तब उसकी लम्बी शाही माला को। राजा उल्फ अवाक था।





जब रानी अपनी सेविकाओं के साथ पहुँची, ड्रैगन राजा का नाश्ता खाने में व्यस्त था।

कुछ ही देर में ड्रैगन ने ऊपर देखा और पहली बार बोला।

"सलाम," उसने कहा, "मेरा नाम ग्रॉग है। मैं एक ड्रैगन हूँ।"

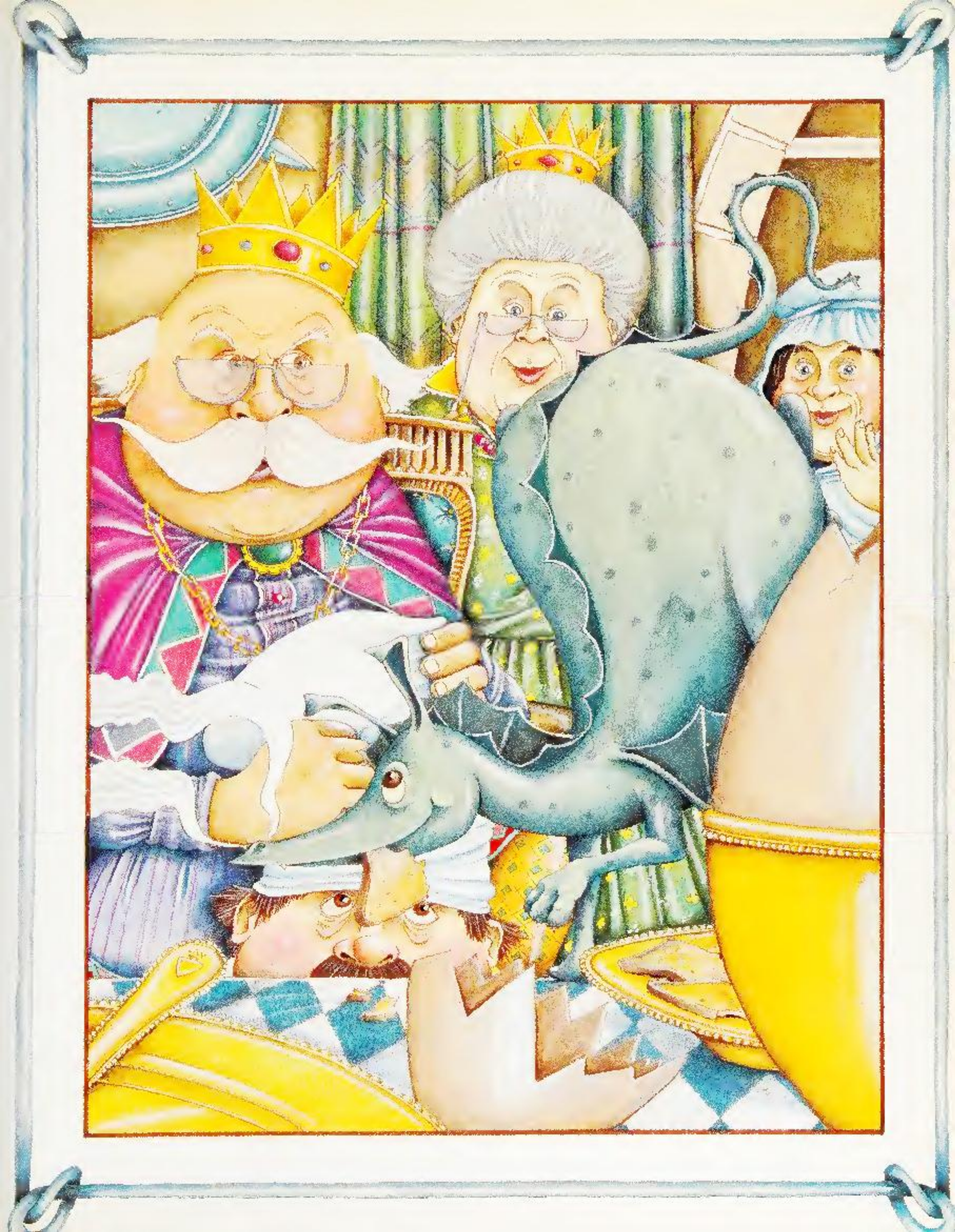
"वह तो दिख रहा है," राजा ने कहा। "और तुम मेरा नाश्ता खा रहे हो - यानी जितना सा बचा था। पहले तो तुम मेरे अंडे से निकले, और अब तुम मेरा टोस्ट खा रहे हो!"

"महाराज," खानसामे ने कहा, "मैं आपके लिए नया नाश्ता बना देता हूँ, एक असली अंडे और ताज़े टोस्ट के साथ।"

"हम्म्म्म!" राजा ने कहा।

इस बीच ड्रैगन अपने हाथों के बल खड़ा हो गया। यह देख रानी हंस पड़ी, पर राजा नाखुश था।

"सब राजा के सामने से दफ़ा हो जाएं," राजा ने रानी और शाही सेविकाओं से कहा।





"ध्याान से सुनो छोटे ड्रैगन, इस तरह की हरकतें बर्दाश्त नहीं की जाएंगी। अगर तुम्हें यहाँ रहना है तो ढंग से पेश आना होगा।"

"मैं कोशिश करूंगा," ग्रॉग ने कहा।

"मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे पैरों में अटको-उलझो" राजा उल्फ बोला। "बेहतर होगा कि तुम रसोईघर में चले जाओ। खानसामा तुम्हारी देखभाल करेगा।"

ग्रॉग को अपना नया घर बेहद पसन्द आया। वहाँ खाने को इतना कुछ जो था! तीन सप्ताह बाद वह एक अलग ही ड्रैगन नज़र आने लगा।





ग्रॉग ने सोचा कि वह अब बड़ा हो चुका है, सो उसने महल में मदद करने की कोशिश की। पर न जाने कैसे हर बार कुछ न कुछ गड़बड़ा जाता।

उसने मोमबत्तियाँ जलाने की कोशिश की, तो खानसामे का टोप जल गया।

जब वह कपड़े सुखाने गया, राजा के मोज़ों और रानी की चड्डी में आग लग गई।





ग्रॉग ने बिस्तर बिछाने की कोशिश की तो वहाँ भी हादसा हो गया। तब उसने रसोईघर में मदद की - पर खानसामे को उसकी मदद करने का तरीका पसन्द नहीं आया। खानसामे का पारा धीरे-धीरे बढ़ता गया। आख़िरकार एक दिन उसने तय किया कि ग्रॉग काफ़ी मदद कर चुका है। ''बस हो गया!'' उसने पैर पटकते कहा। ''इस ड्रैगन को तो जाना ही होगा।''





खानसामे ने सभी सेवादारों को बुलाया।

"इस ड्रैगन के बारे में कुछ करना ही होगा," उसने कहा।

शाही धोबन उसकी बात से सहमत थी।

शाही सेविकाएं भी सहमत थीं।

सब सहमत थे। सो उन्होंने एक समिति बनाई, और राजा से मुलाकात करने गए।

"महाराज," वे बोले, "यह ड्रैगन शाही सेवक नहीं है - वह एक शाही सिरदर्द है! ग्रॉग को महल से जाना ही होगा, नहीं तो हम सब हड़ताल करेंगे।"

राजा उल्फ घबरा गया। उसके राज में पिछले सौ सालों में कोई हड़ताल हुई ही नहीं थी। और हड़ताल का मतलब था - कोई बिस्तर ठीक नहीं करेगा, अलाव नहीं जलेंगे, और कोई नाश्ता नहीं परोसा जाएगा।





राजा पूरी रात फ़िक्र करता रहा। क्या करे, यह सोचता रहा।

"मुझे ड्रैगन से बात करनी होगी," उसने तय किया। सो अगली सुबह वह ग्रॉग को ढूंढने गया।

ग्रॉग जानता था कि वह मुसीबत में है, सो उसने छिपने की कोशिश की। पर राजा ने उसे जल्द ही खोज लिया।

"आप मुझे महल से बाहर भेज देने वाले हो, है ना?" ड्रैगन ने बिसुरते हुए पूछा।

पर राजा उल्फ रहमदिल था। "मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं करूं तो क्या? तुम एक अच्छे ड्रैगन बनो। लो अपनी नाक सिनको!" राजा ने अपना रूमाल ग्रॉग को थमाते कहा।

ग्रॉग ने वह किया जो उसे कहा गया था और रूमाल ने भक्क से आग पकड़ ली।

राजा हंस पड़ा - उसे एक उम्दा ख़याल सूझ गया था।

"तुम और सभी शाही सेवादार नौ बजे दरबार में हाज़िर होना," राजा ने हुक्म दिया।





बाद में, जब सेवादार दरबार में इकट्ठा हो गए, राजा उल्फ ने अपना गला खंखारा और छाती फुलाई।

"मुझे एक ज़रूरी ऐलान करना है," राजा ने कहा। "मैंने तय किया है कि ग्रॉग को एक बेहद ज़रूरी काम दूं।"

"उम्मीद है रसोईघर में नहीं," खानसामा बुदबुदाया।

"मुझे बिस्तर बिछाने में उसकी कोई मदद नहीं चाहिए," एक सेविका ने कहा।

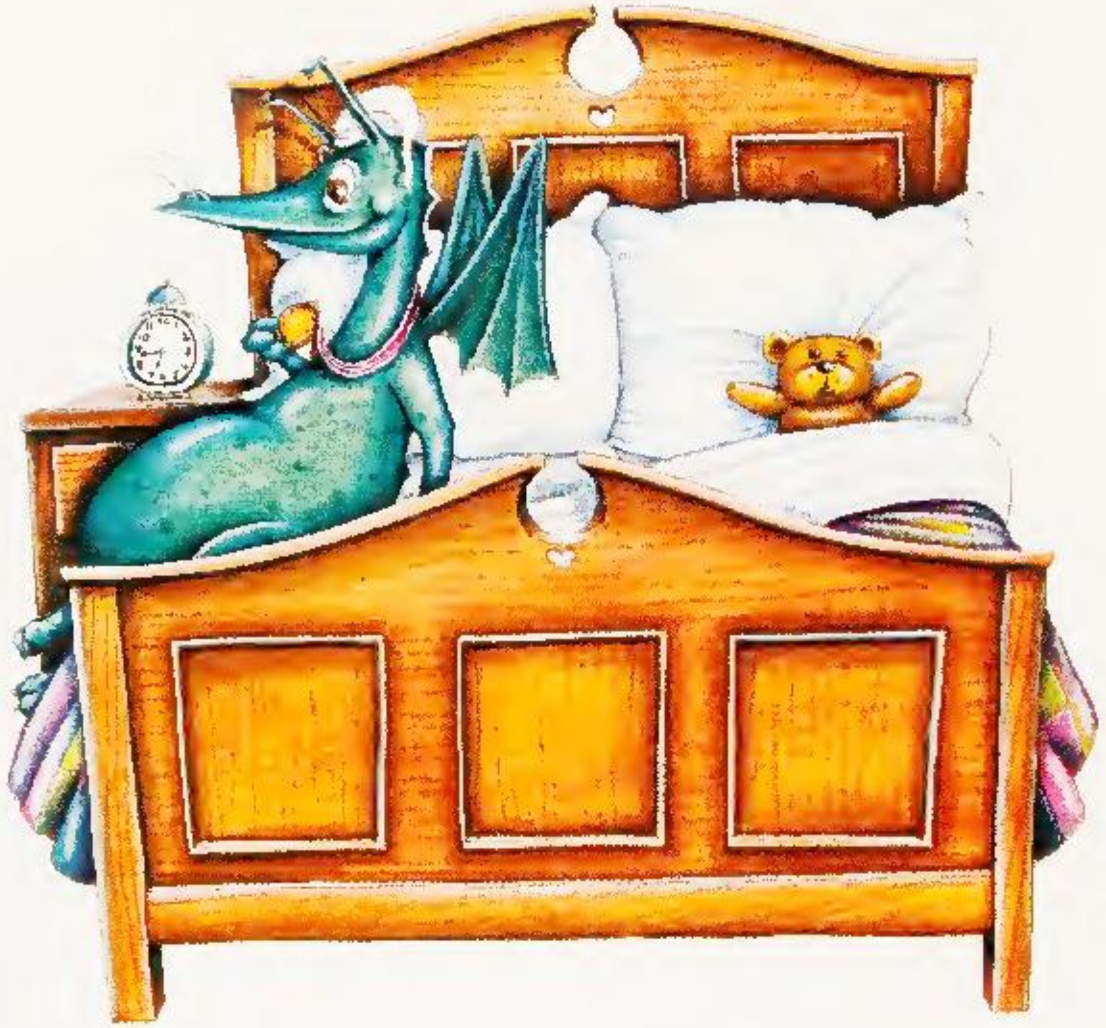
"वह सब कुछ जला डालने में माहिर है," शाही धोबन ने शिकायत की।

"यही तो," राजा बोला। "अब से ग्रॉग शाही आग जलाने वाला होगा। सिर्फ उसे ही महल के अलावों को जलाने की छूट होगी।"

यह सुन सब खुश हो गए, खानसामा भी! राजा की योजना के चलते अब शाही सेवादारों को हड़ताल पर नहीं जाना होगा।

राजा ने ग्रॉग के गले में शाही आग जलाने वाले का तमगा डाला। ग्रॉग गुरूर से भर दमकने लगा। वह बेहद खुश था।





अगली सुबह ड्रैगन अल्ल सुबह उठा और दबे पाँव नीचे गया, ताकि अपना नया काम शुरू कर सके। पर वह पहले राजा को जता देना चाहता था कि वह कितना अहसानमन्द है। उसने तय किया कि वह राजा का नाश्ता खुद बनाएगा, और उसे बिस्तर में ही खिलाएगा। उसने सावधानी बरती कि कुछ जले नहीं। जब सब तैयार हो गया वह गलियारे पार करता राजा के सोने के कमरे में पहुँचा। उसने दरवाज़ा खटखटाया।

एक उनींदी आवाज़ ने जवाब में कहा, "आ जाओ!"





ग्रॉग ने नाश्ते का थाल शाही बिस्तर पर रखा।

राज यह देख सकपका गया कि थाल पर रखा अंडा अपने आप तड़कने लगा है।

"अरे नहीं! फिर से नहीं!" राजा फुसफुसाया। "यह फिर से नहीं हो सकता!"

अंडा कुछ और तड़का।

"महल में दो ड्रैगनों के जलाने लायक अलाव नहीं हैं!" राजा उल्फ रुंआसा हो बोला।

अंडा एक आख़िरी बार तड़का और उसमें से एक छोटे चूज़े का सिर निकला।

राजा ने उसे घूरा।

तब राजा ज़ोर से खिलखिलाते हुए हंसा।

शाही आग जलाने वाला ग्रॉग सिर्फ मुस्कुराया।




समाप्त

